मीदे

मनयदंतिनी पद्यो॥ १७॥ व स्नभाद यितेऽध्यक्षे सस्त्रक्ष्य गत्रंगमें । वर्षाभू स्वी चर्रा खंद्रांभू लतास्वयाः प्रमान् ॥ १०॥ विष्क्रमायाग्रेभ देखादिस्तारप्रतिवस्त्रयाः । रूपकांगप्रभदेचवंधभदेचयागिनां ॥ १०॥ विश्रंभः केलिक लहे विश्वासेप्रग्रेषिच । विष्टंभः प्रतिवंधस्यास्त्रभदेचाम यस्य ॥ १०॥ वृष्ठभः श्रेष्ठ वृष्ययोवद्भी रीतिभिद्यपि । वेद भेवाक्यव क्रावेश रभक्तपंग्रीभिदि ॥ २२॥ कर्भवासरभिदिस्त्राभित्रीतिनुस्य याः । छरभिः श्र स्वकीमावृभित्राग्रीष्ठियोषिति ॥ २२॥ वंपकेषवसं तेष न्याजातीप्रलेपमान् । स्वर्थीगंधात्मले स्वीवंद्धगंधिकात्योस्त्रिष्ठ ॥ २३॥ विख्यातेश्चिवंधिरे वेनेऽपिचप्रमानयं ।॥ भचतः ॥ अनुष्ट्रस्थान्यर स्वत्यं क्रिदेशिदे चयोपिति ॥ २४॥ अवष्टंभः स्वर्थेष्ट्रस्थान्यरं स्वर्थे। क्रिदेशिदे चयोपिति ॥ २४॥ अवष्टंभः स्वर्थेष्ट्यस्त्रभप्रारंभयोरिष । श्र

मा रहा जान कर्ना का निर्मान करिया है कि है जिल्ला है कि है जिल्ला है कि लिल्ला है कि लिला है कि लिल्ला है कि लिला है कि लिल्ला है कि लिला है कि लिल्ला है कि लिला

माना०

॥ मेनं ॥ मायमस मयेऽपिसादिने न मध्य दने। माखीपद्मालयायां स्थानप्रक्षिंगसन्द्रशेखरे॥ १॥ मदिः ॥ आमार् कद्भिराः प्रंतिस्थादप क्रोन्यलिंगकः। जमाऽतसी है मवती हरि द्राकी निकातिषु॥ २॥ जिर्मिः स्वीयंस्थावीच्यायकाशे वेगभन्नयाः। बखसंका चरे खायां वेद नापी उद्योग वि॥ ३॥ जमस्य नुजमेश तो कम्पचाजम गोपिच। स्वामाम्मातितिसा